रविवार दिनाँक 10-12-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरा दिल तो चाह रहा है, तेरे दिल से दिल मिलाना।

मेरा दिल तो चाह रहा है, रहा है, तेरे दिल से दिल मिलाना।।

तेरे दिल से दिल मिलाकर, तेरे साथ चलते जाना।

तेरे दिल से दिल मिलाकर, मिलाकर, तेरे साथ चलते जाना।।

क्योंकि

तूं ही है मेरी मंज़िल, तू ही मेरा ठिकाना।

तूं ही है मेरी मंज़िल, ओ मंज़िल, तू ही मेरा ठिकाना।।

सजनों जब ऐसा शुभ विचार मन में जाग्रत होता है तो चित्त स्वयं ही प्रसन्न हो उठता है। अतः इस विचार को केवल गायकी तक ही सीमित नहीं रखना अपितु क्रियावन्त भी करना है ताकि यह अपनी मन्जिल को प्राप्त कर एकता, एक-अवस्था में स्थिर हो जाए। जानो सजनों यदि ऐसा होता है तो इससे उत्तम कोई बात नहीं है और न ही कोई प्राप्ति। इस संदर्भ में सजनों हमारे परमार्थी पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी भी यही चाहते हैं कि उनके द्वारे पर रत हर सजन अपना दिल, हृदय सुशोभित परमात्मा में लीन कर, निरन्तर जीवन में आगे बढ़ता जाए व अंत परमधाम पहुँच विश्राम को पाए। मानो सजनों इससे उत्तम इच्छा और कुछ नहीं है। अतः केवल यह शरीर से न बोलो अपितु सुरत यानि अपने आप को प्रभु की चरण-शरण में समर्पित भी करो ताकि एकरूपता के भाव

में आकर, निर्लिप्तता से इस जगत में विचरने को योग्य बन, यश-कीर्ति को प्राप्त कर सको। समझ आई बात? तो अब भजन सुनोः-

लगदेम प्यारे जी लगदेम प्यारे जी, रघुनाथ जी दे सांवले चरण।

सांवले चरण, डाहढे सोहणे चरण, मन मोहने चरण।।

संसार सागर विच किशती पड़ी है, कौन हुण पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

महाबीर जी दे चरणां नाल प्रीत लगाओ, ओही किशती नूं पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे चरणां दे हैन प्यारे, नाले आँखों के हैन ओ तारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मैं दासी बली बली पुकारां, ओ त्रिलोकी दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

कंधे हीरियाँ वाली गदा साजे, हथ विच चरण प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

हथ धनुष मस्तक तिलक बिराजे, सारी दुनियां दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मन मोह लिया सांवली सूरत ने, सारी दुनियां दे चमकारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

राज अटल तुआडा सदा ही राहवे, दासी हथ जोड़ अर्ज़ गुजारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

सजनों इस बात को जानो व मानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित हर शब्द कितना सहज व सरल है। इस परिप्रेक्ष्य में हम यह सोचकर हैरान होते हैं कि कलियुगवासी क्यों कर इस कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों के अर्थों को जानकर व समझकर अपने जीवन में उतारने के प्रति कमज़ोर पड़ते हैं? ज्ञात हो कि परमात्मा तो हमारे जीवन में सदा सुख आनन्द भरना चाहते हैं, परन्तु हम दुनियां में उलझे रहने के कारण यह नहीं जान पाते कि परमात्मा का खेल कितना विचित्र है। उस विचित्रता का सजनों जो पारावार पा जाता है केवल वही सजन सच्चेपातशाह जी की तरह कह उठता हैः-

लगदेम प्यारे जी लगदेम प्यारे जी, रघुनाथ जी दे सांवले चरण

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि क्योंकर हम परमात्मा के आचरण, युक्ति व तरीके को नहीं जान पाते और फिर तद्नुरुप अपने नज़रिए को ढाल पाते? जानो सजनों जो प्यारा लगता है इंसान उसके लिए कुछ भी त्यागने के लिए तैयार हो जाता है। अतः यदि हमें परमात्मा के चरण पसंद है यानि उन द्वारा प्रदत्त युक्ति, आचरण व तौर-तरीका प्यारा लगता है तो उस प्यार पर खरा उतरने के लिए हमें अपने अन्दर व्याप्त हर प्रकार की नकारात्मकता को त्यागने के प्रति कदापि कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ जानो कि जो नकारात्मकता हम त्याग रहे हैं, वह संसार की देन है और जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से आचार, विचार और व्यवहार का ज्ञान प्राप्त हो रहा है, वह हमारी यथार्थता का परिचायक है। इस यथार्थता अनुकूल जीवन जीने के योग्य बनने से हमें केवल और केवल एकमात्र स्वार्थ रोकता है।

यह स्वार्थ हमारा रास्ता न रोके इसलिए तो सजनों दिनाँक 24 और 25 दिसम्बर 2023 को आध्यात्मिक क्रान्ति नामक प्रोग्राम रखा गया है ताकि हर सजन स्वार्थभाव से ऊपर उठकर परमार्थ भाव में आने के प्रति जाग्रत हो जाए और कुल

ब्रह्माण्ड को जागृति में लाने के लिए तन-मन-धन से भी न सकुचाए। सजनों जानो कि शास्त्र विहित् आचार, विचार और व्यावहारिक युक्ति मन के लिए पौष्टिक आहार है। इस आहार को सेवन करने वाले का रोम-रोम, रग-रग, हद-हद, पब-पब हर समय ब्रह्मसत्ता से भरपूर रहता है। इसलिए तो ऐसा इंसान शारीरिक-मानसिक दोनों रूपों से सदा स्वस्थ रहता है। इसके विपरीत अविचार आध्यात्मिक अस्वस्थता का कारण होता है। आध्यात्मिक अस्वस्थता सबसे ज्यादा नुक्सानदायक होती है क्योंकि अविचार युक्त रास्ते पर चलने वाला कदम-कदम पर ठोकरें खाता है और ठोकरें खा-खा कर भी संभलने में नहीं आता। वहाँ 'मैं' उसे मारती है क्योंकि 'मैं' आत्मसुधार व आत्म उद्धार में बहुत बड़ी रुकावट होती है। यहाँ यह भी जान लो कि जीवन में रुकना अनुचित होता है और निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर गतिशील रहना सफलता का प्रतीक होता है।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि आज के युग में कोई भी किसी को समझाकर सद्मार्ग पर नहीं ला सकता यानि जब तक खुद के अन्दर सुधरने की उत्कण्ठा पैदा न हो तब तक कोई भी सुधार नहीं कर सकता। सजनों यह 'अहं' भाव सबके अन्दर विद्यमान है। हर कोई छोटा-बड़ा सजन अपने आप को अक्लमन्द समझता है। अतः आत्मसुधार हेतु अपने आप को समझाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना अनिवार्य है क्योंकि आपके जीवन का अन्त परिणाम आपके अपने मन-वचन-कर्म पर निर्भर करता है। यदि आप जो सोचते हो, जो बोलते हो और करते हो वह सकारात्मक होता है तो आप जीवन विजयी हो जाते हो और यदि आप जो सोचते हो, बोलते हो व करते हो वह नकारात्मक होता है तो आप विफल हो जाते हो। इस तरह आपका अन्त नतीजा हार का निकलता है और आप खुद अपने आप को नकारा बना बैठते हो। याद रखो जो इन्सान खुद ही खुद को नकारता है यानि मन-वचन-कर्म से नकारात्मक ही करता है, उस इन्सान की कोई भी इज्ज़त नहीं करता और न ही उसे कहीं से प्यार मिलता है। इस तरह स्वार्थी इन्सान सब कुछ नकारा करके अपनी इज्ज़त

दाँव पर लगा देता है। इसके विपरीत जो परमार्थी होता है उसकी तीनों लोकों में यश-कीर्ति फैलती है क्योंकि समय के अनुसार उस समय तीनों लोकों में जो भी चल रहा होता है, वह उसको समरसता से ग्रहण करने के लिए डटा रहता है व वैसा उत्तम कर दिखाने की हिम्मत रखता है। ऐसा सजन हर परिस्थिति में समरस रहने के योग्य होता है और वही योग्यता सबके सामने प्रदर्शित करता है। चाहे कोई उसकी कितनी ही निन्दा या उस्तत क्यों न कर ले वह किसी के पंजे में नहीं आता और अंतत करनी का फल तो करने वाले को मिल ही जाता है।

अतः सजनों किसी कारण भी वड-छोट का सवाल पैदा नहीं करना या किसी से कुछ नहीं लेना-देना क्योंकि यह इस द्वारे की नीति नहीं है। यहाँ तो सबसे आत्मीयता का नाता है। जानो जब सबके साथ आत्मीयता का नाता बनता है तो सब के सब समरूप हो जाते हैं यानि सब फ़र्क समाप्त हो जाता है। सबका सुख-दुःख बराबर हो जाता है, फिर चाहे वह अमीर हो या गरीब हो। सुख-दुःख तो इन्सान अपने संचित कर्मों के कारण भोगता है। इस फल भोग के समय उसें सब्र का सबक़ सीखना होता है यानि अपने आप को समझाना होता है कि कि हे इन्सान ! हिम्मत दिखा, सब्र रख और अपने कर्मों का फल आनन्द से स्वीकार ले ताकि वह सर्वव्यापक भगवान आपके मन का भाव/भावना को जान जाए और आपके सब कर्म कट जाएँ। सजनों यह कर्मफल से विमुक्त होने की शुभ बात होती है। जानो जहाँ कर्मफलों से मुक्ति मिल रही होती है, वहाँ स्थिर रहना चाहिए और उस फल को हँसकर स्वीकारना चाहिए लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि स्वार्थ हमें कमज़ोर बना देता है।

इसीलिए तो सजनों दिनाँक 24, 25 दिसम्बर का प्रोग्राम रखा गया है ताकि आप स्वार्थपरता का स्वभाव छोड़ मन, वचन, कर्म से परमार्थ बन जाओ। परमार्थ बनने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना अति आवश्यक है, अतः एक-दूसरे की

निन्दा-उस्तत करने के स्थान पर इस ज्ञान प्राप्ति में समय लगाओ ताकि जीवन-उद्धार कर जीवन-विजयी हो जाओ।

जानो इस आयोजन के दौरान यदि आपके परिवार का हर सजन यहाँ उपस्थित होगा तो सामूहिक रूप से आप अपना गृहस्थ आश्रम सतयुग बनाने में कामयाब हो जाओगे और वह कामयाबी आपकी मनःशान्ति का प्रतीक होगी। इस तरह तब अशान्ति समाप्त हो जाएगी क्योंकि शान्ति-शक्ति का गुपट हीरियाँ जड़त हथियार प्राप्त हो जाएगा। अभी तो आपके पास उस हथियार की महत्ता को समझने की योग्यता नहीं है, इसलिए आगे की बात नहीं बता रहे। अतः पहले आप योग्य बनो फिर आपको वह महिमा भी पता लग जाएगी। चलो अब आगे कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

जदों दी नज़र टिकाई ओ इन्हां चरणां ऊपर, ओ ओ चरण नैनां दे हो गये।

तदों दी हर जगह रौशनी पाई, अजब इन चरणों ने रमज़ दिखाई।

तदों चरणां दी समझ आई, चरण नैनां दे हो गये।।

(श्री हनुमान जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

इन्हीं चरणां दे नाल साजन जी हर्षाई जाओ।

इन्हीं चरणां दी माला गले विच पाई जाओ।।

चरणां नाल जीवन बनाई जाओ, चरण नैनां दे हो गये।

जदों दी नज़र टिकाई, ओ इन्हां चरणां ऊपर, ओ ओ चरण नैनां दे हो गये।।

इन्हीं चरणां नाल रौशन नाम कहाई जाओ।

चरणां नाल सुत्ती जनता दी किस्मत जगाई जाओ।।

चरणां नाल उमड़ उमड़ाई जाओ, चरण नैनां दे हो गये।

जदों दी नज़र टिकाई, ओ इन्हां चरणां ऊपर, ओ ओ चरण नैनां दे हो गये।।

इन्हीं चरणां नाल जनता नूं हर्षाई जाओ।

इन्हीं चरणां नाल सजनां दे जीवन बनाई जाओ।।

चरण ओन्हां नूं दिखाई जाओ, चरणां नूं समझ सके जो।

जदों दी नज़र टिकाई ओ इन्हां चरणां ऊपर, ओ ओ चरण नैनां दे हो गये।।

सजनों मानो जब भी कोई सजन दिल से गाता है तो अफुरता आ जाती है। जब अफुरता हो जाती है तो वातावरण ऐसा निर्मल बन जाता है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जो भी विचार चलते हैं उनकी समझ आने लग जाती है। इस कीर्तन के अंतर्गत भी सच्चेपातशाह जी कुल सृष्टि को स्वार्थ से परमार्थ बनने का आवाहन देते हुए कहते हैं कि जहाँ ख़्याल अफुर होता है और हमारी भाव-भावना कुछ प्राप्त करने के प्रति सत्यतापूर्ण व विशुद्ध होती है, तो ध्यान-दृष्टि यानि हृदय-दृष्टि स्वतः ही खुल जाती है। इस हृदय-दृष्टि के खुलते ही, हृदय विदित यथार्थ ज्ञान (जो जीवन के हर पहलू को यथार्थता से निर्विकारितापूर्ण जीवन जीने की परिपूर्ण कला से परिचित कराता है) पर नज़र जाती है और दृष्टि उसको पढ़ती है। तब ही वह ज्ञान ख़्याल के जरिये मन में उतरता है। तो सजनों जानो कि इतनी सी योग्यता के प्रति निष्कामता से पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। जो इस पुरुषार्थ में सफल हो जाता है वह उसी क्षण ज्ञानरूप में आत्म-निर्भर बनना आरम्भ हो जाता है। फिर जब धीरे-धीरे यह ज्ञान धारण करते-करते अंतर मन में उतर जाता है और वही विचारधारा अन्दर चलती है, तो सब तरफ

निर्मलता का वातावरण पनपता है। ऐसा होने पर कोई दूषित भाव या जगत अंतर मन में दाखिल नहीं हो पाता क्योंकि आत्मिकज्ञान रूपी ज्ञान का खजाना भरपूर होता है। फिर उसी निर्मल ज्ञान अनुरूप विचार बुद्धि को प्राप्त होते हैं तो बुद्धि भी निर्मल हो जाती है यानि सचेत हो जाती है और भ्रम रहित होकर स्पष्टता का प्रतीक बन जाती है। सजनों फिर इन्सान अपनी बौद्धिक-शक्ति का इस्तेमाल सुकर्म करने में करता है। इस सन्दर्भ में जब बुद्धि निर्मल हो गई तो चित्त भी हर्षा उठता है और समर्थवान बन जाता है। ऐसे में मन परमात्मा का साक्षात्कार करते हुए आत्म-विभोर हो जाता है यानि परमानन्द प्राप्त कर लेता है। फिर इस परमानंद से सराबोर हो वह साधक जब आँख खोलता है, कुदरत को देखता है तो जो मन-मन्दिर में प्रकाशित है, वही प्रकाश सर्व-सर्व निगाह आता है। तब 'तूं-मैं'' का भेद समाप्त हो जाता है, बैहरुनी वृत्ति के सब कार्य, भाव-स्वभाव समाप्त हो जाते हैं। तब इन्सान का अन्तःकरण इतना अधिक विशुद्ध हो जाता है कि अन्तर्जगत और बाह्यजगत में कोई फर्क नज़र ही नहीं आता। इस अवस्था में ख़्याल नश्वरता और अमरता के मध्य अंतर समझ अमरता का भाव प्राप्त करने के प्रति लालायित हो जाता है और हर क्षण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार 'अलफ़' मे स्थित रहता हुआ 'ये' को पा जाता है। जब 'ये' को पा जाता है तो उसे इस सृष्टि के सत्य की समझ आ जाती है कि जो मैं हूँ, वह भी वही है और जो वह है, मैं भी वही हूँ। वही परमेश्वर ही अपनी सृष्टि को चलायमान रखने के लिए हमें जगत उद्धार हेतु मानव रूप देकर यानि शरीर रूपी मशीनरी देकर उस कार्य की सिद्धि करने हेतु भेजता है परन्तु हम उस कार्य को सिद्ध करने की जगह पर अपने जीवन का समय स्वार्थसिद्धि में लगा रहे हैं। यह बहुत बड़ा धोखा है। इस धोखे को दृष्टिगत रखते हुए ही सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कहते है कि हे श्री साजन जी ! यह जो जनता त्रेता, द्वापर से लेकर इस कलियुग में भी नकारात्मक प्रभाव में आकर चिर-निद्रा में पड़ी हुई है, उनको यह युक्ति बताकर उनके जीवन बना दो। यह है परोकार प्रवृत्ति में ढ़लना और ब्रह्म नाम कहाना।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अब इसी कार्य के प्रति सबको जाग्रत करने हेतु ही यह प्रोग्राम रखा गया है ताकि सब अपना जीवन उद्धार करने के काबिल बनें। सजनों बस इतनी सी तो बात है। अतः अपनी किस्मत जगाओ और मतलबी मत बनो। मतलब यह है कि पहले पुरुषार्थ कर, अपनी किस्मत जगाओ, फिर सोई हुई जो जनता है, आत्मज्ञान प्रदान करने की युक्ति बताकर, उनको भी काबिल बनाओ और सुपुत्र नाम कहाओ। जानो कि सुपुत्र वह होता है जो पिता की कुदरती वाणी को यथा सहर्ष स्वीकारे और मन-वचन-कर्म में उतार कुल संसार के समक्ष आदर्श स्थापित करे ताकि उनके मन में भी उमंग जाग्रत हो।

इस सन्दर्भ में सजनों आपका जीवन परोपकार करने के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए। हम आपको बताते हैं कि ऐसा करने पर आपके अन्दर किसी कारण भी जो 'काम' सुप्त रहता है और जो आशा-तृष्णा की सर्पणी ऐसे फुकारे मारती है वह शान्त हो जाएँगी। फिर मन के अन्दर कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा ही नहीं रहेगी। हम कहते हैं कि मन के अन्दर वैसी इच्छा क्यों पनपे? वैसी वस्तुएँ प्राप्त करने की इच्छा जो कि नश्वर हैं, आज हैं तो कल नहीं हैं, जो आज खुशी देती हैं और कल न होने पर हमें रुलाती हैं, तड़फाती हैं, परेशान करती हैं। हम सद्मार्ग पर आगे बढ़ने के काबिल बनने से क्यों सकुचाते हैं? जानो यह सकुचाहट अपने प्रति वैर-भाव पैदा करती है। हमने तो सजन भाव अपनाना है जो कि परमात्मा का स्वरूप है। उसी को सब में देखते हुए सजनता का वर्त-वर्ताव करना है। इस बात को मानो कि अगर अभी भी आपको यह बात समझ नहीं आती तो आपकी बीमारी लाईलाज है। आप तो औषधि का भी सेवन नहीं करना चाहते ताकि आपका ईलाज हो जाए। जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी डॉक्टरों के भी डॉक्टर हैं। उन्होंने तो औषधि बता दी पर अगर हम सेवन ही नहीं करेंगे तो क्या कोई लाभ होगा?

नहीं जी।

इस तरह आप खुद को परेशान, पूरे परिवार को परेशान और समाज को भी परेशान कर रहे हो। नीति-विरुद्ध जीवन जीने के पश्चात वैसा ही दुष्परिणाम होगा। अगर आज भी समझ नहीं पड़ा तो 24, 25 को दुबारा से समझ लेना। अब कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।

मेरा है प्यार महाराज जी दे नाल, हां हां तेरा मेरा।।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार ओ प्यार।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई ढूंड रिहा तुहानूं जंगलों में, ढूंडे नदी नाले पहाड़।

तुहाडे मिलने की खातर हिन, हिन ओ अव विचार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई लिटां वधावे कोई धूनियां लावे, कई भस्म रमा रमा गये ने हार।

तुहाडे मिलने की खातर हिन, हिन ओ अव विचार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

कोई हकलां मारे कोई खड़ा पुकारे, कोई हकलां मारे कोई खड़ा पुकारे।

कोई पुकार रिहा, पुकारे ओ बारम्बार, जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

हुन आलम रही पुकार, आ आ ओ परवरदिगार।

आ-आ-आ-आ-आ सच्ची सरकार जी ओ तेरा मेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।

मेरा है प्यार हां-हां प्रेमियां दे नाल, ओ हो मेरा तेरा।।

सम ते सन्तोष होवे, धैर्य ते विचार होवे।

साडे नाल प्रेम ते प्यार होवे, तदों मैं देवां अपने प्यारियां नूं।।

देंदा राहवां दीदार जी ओ मेरा तेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

नाम चलावे जो ध्यान लगावे नाम चलावे जो ध्यान लगावे।

ओ दर्शन पा रहे ने पा रहे ने बारम्बार जी ओ मेरा तेरा।

तेरा मेरा, मेरा तेरा, तेरा मेरा प्यार, जी ओ मेरा तेरा।।

सजनों इस कीर्तन द्वारा शास्त्र कुदरत का सत्य हर मानव को जना रहा है, अतः इसको स्मृति में रखना है। सच्चेपातशाह जी जब इस सत्य से परिचित हो गये तो वह कहते हैंः-

जीव जन्तु प्रभु जी तेरे उपजाये। फुरने दे स्त्री पुरुष नज़र आये।।

सब स्त्रियां इक पुरुष हर थाईं। बे अन्त बे अन्त बे अन्त गुसाईं।।

अब आपको विस्तार से बताते हैं। आप सब पति-पत्नियों का प्यार किसके साथ होना चाहिए?

‘महाराज जी के साथ’।

मिसाल के तौर पर एक स्त्री, एक पुरुष है और यदि स्त्री किसी और के साथ प्यार करे तो क्या आपको अच्छा लगेगा?

‘किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा’।

इसी तरह से आप सभी सुरत रूपी स्त्रियों में से कोई भी यदि जगत के साथ प्यार करे तो क्या आपकी आत्मा में शोभित परमात्मा को अच्छा लगेगा?

‘नहीं जी’।

जानो अगर आप में से किसी से भी ऐसी भूल होती है तो उसका मतलब होगा कि आप अपने सच्चे शौह से विमुख हो गये। इस संदर्भ में स्पष्ट है कि हमें भी जो आत्मा में परमात्मा है, उसके प्रति अपना प्यार समर्पित रखना होगा।

अब सजनों जो भी स्त्री-पुरुष यहाँ बैठे हैं सभी मानो कि आप सब स्त्रियाँ हो क्योंकि सुरत स्त्री है और पुरुष एक ही है जिसके उदर से यह जगत प्रगट हुआ है। जानो वही बीज है। अतः सजनों आपका मन उससे अलग हो एक पल के लिए भी इधर-उधर न भटके और दूसरों के घरों में जाकर न बैठे अपितु अपने ही घर में स्थित रहे। इस सन्दर्भ में अगर कोई भी स्त्री कम या ज्यादा समय औरों

के घर में लगाती है तो वह दुराचारिता का प्रतीक बन सकती है। इसके विपरीत जो स्त्री (सुरत) सदाचारिता का प्रतीक होती है उसका परम कर्त्तव्य होता है कि वह अपने ख़्याल को अपने सच्चे घर में जो शौह है उसमें स्थित रखे और उसकी आज्ञा का पालन करे। वैसे भी हमारे सर्वशक्तिमान शौह के पास सब कुछ है। उसी ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है। रचना के उपरान्त कौन क्या कर रहा है उस पर भी नज़र रखने की व्यवस्था भी कायम की हुई है। जो, जो कुछ भी कर रहा है उसकी लिखत भी होती जा रही है चाहे वह उसे मन से, वचन से या फिर कर्म से करे। अतः इस बात को समझना है और अपना ख़्याल अपने सच्चे घर में जोडे रखना है। इतना समझाने के भी बाद अगर स्त्री का ख़्याल बेघर हो जाए तो क्या वह घर में रहने की अधिकारी होती है?

'नहीं जी'।

सजनों फिर हम घर-घर के फुरने लेकर जगत में क्यों विचर रहे हैं? यह दुराचारिता व व्याभिचारिता को दर्शाता है और भ्रष्ट-बुद्धि का संकेत देता है। आप खुद को जो मर्जी समझो पर अगर आपका ख़्याल कहीं और स्थित रहता है तो आप निश्चित ही भ्रष्ट बुद्धि इन्सान हो। जानो यही कुदरत का नियम है कि ख़्याल को अपने सच्चे घर के अन्दर चौबीस घन्टे ध्यान-स्थिर रखो ताकि आपका शौह प्रसन्न हो और आपको महारानी, पटरानी बनाकर मालोमाल कर दे। जानो जो ए विध् मालोमाल होता है वही अमीरों का अमीर कहलाता है। उसके अन्दर कोई कामना नहीं रहती और उसका जगत-जँजाल मिट जाता है।

इस सन्दर्भ में अब आपको अपने ऊपर नियन्त्रण रखना है कि ख़्याल कदापि इधर-उधर न भटके बल्कि सच्चे घर में स्थित रहे। इस विषय में सच्चेपातशाह जी सुरत को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि 'अपना हत्थ कार वल ते चित्त यार वल रखो' यानि जो भी संसार के कर्म करने हैं वह शास्त्र-विहित नियमों अनुसार करो,

और चित्त यार वल रखो। मानो कि जिससे प्यार होता है वह यार ही होता है। सजनों अब अगर किसी के अन्दर इससे विरुद्ध भाव-स्वभाव हैं तो समझ लो कि प्रलय आने वाली है। फिर पता ही नहीं चलेगा कि कहाँ गये। आज के युवा वर्ग को यह जानकारी होनी चाहिए थी जो कि माँ-बाप ने नहीं दी। इसीलिए युवा पीढ़ी पथ-भ्रष्ट हो रही है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में उन्हें पुनः सद्मार्ग पर लाने के लिए विचार और अविचार दो शब्द बताए गये हैं। विचारयुक्त और अविचारयुक्त रास्ता गहराई से समझाया है ताकि अक्ल टिकाणे आ जाए और अपना जीवन अर्थ सिद्ध कर ले। सजनों आपको भी व्याभिचारी नहीं अपितु परोपकारी, व सदाचारी बनना है और अपनी किस्मत को आप जीतना है। आप ऐसा करने में कामयाब हो इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।